

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

आंगन का मिलन माँड्यूल के तहत आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण गतिविधियों से रूबरू हुई महिलाएं



खंड झज्जर व डीघल के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों पर हुआ तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ 19 हजार 517 लाभार्थी बने भागीदार, पोषण, स्वस्थ खान-पान और सरकारी योजनाओं की दी जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में स्वस्थ जीवनशैली और सामुदायिक स्वास्थ्य के प्रति किया जा रहा जागरूक

झज्जर, 25 सितंबर जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में आगामी 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत शुक्रवार को 'आंगन का मिलन' माँड्यूल के अंतर्गत खंड झज्जर व खंड डीघल के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों

में तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन आंगनवाड़ी केंद्रों पर लाभार्थियों से संवाद कर पोषण, बच्चों की वृद्धि एवं विकास, स्वस्थ खान-पान और अच्छे व्यवहार सहित विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई।

आंगनवाड़ी केंद्रों पर लाभार्थियों से किया संवाद महिला एवं बाल विकास विभाग की डीपीओ नेहा दहिया ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान आंगनवाड़ी केंद्रों के लाभार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें बच्चों के उचित पोषण, वृद्धि एवं विकास तथा स्वस्थ जीवन शैली के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिए संतुलित एवं

पौष्टिक आहार के संबंध में भी जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि खंड झज्जर के 269 तथा खंड डीघल के 177 आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित गतिविधियों में खंड झज्जर से 10,760 तथा खंड डीघल से 8,757 लाभार्थियों ने भाग लिया। इस प्रकार दोनों खंडों में कुल 19,517 लाभार्थियों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

महिलाओं के कल्याण को लेकर सरकारी योजनाओं की भी दी जा रही जानकारी डीपीओ ने बताया कि कार्यक्रमों के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग की टीम द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में भी लाभार्थियों को जानकारी दी गई। इनमें

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व एवं शिशु कल्याण योजना तथा आंगनवाड़ी आधारित स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी योजनाओं की जानकारी शामिल रही।

पोषण और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति किया जागरूक डीपीओ ने बताया कि 'आंगन का मिलन' माँड्यूल के माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्रों को पोषण, स्वास्थ्य, योग एवं स्वस्थ जीवनशैली संबंधी जागरूकता का केंद्र बनाया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य लाभार्थियों को स्वास्थ्यवर्धक आदतों को अपनाने तथा बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं विकास के लिए जागरूक करना है।

सेवा की कहानी : निपुण यात्रा में झज्जर का योगदान बना पूरे हरियाणा के लिए प्रेरणा



स्थानीय नवाचार और शिक्षक सहभागिता से मजबूत हो रही बच्चों की बुनियादी शिक्षा 'मिशन निपुण झज्जर' में हर बच्चे की सीखने की क्षमता पर विशेष फोकस

झज्जर, 25 सितंबर किसी बच्चे का पहली बार आत्मविश्वास के साथ पढ़ना, संख्याओं को समझना, चित्र देखकर कहानी सुनाना या अपनी बात सहजता से व्यक्त करना—शिक्षा के यही छोटे-छोटे पड़ाव आगे चलकर बड़े बदलाव की मजबूत नींव तैयार करते हैं। बच्चों में इन्हीं बुनियादी कौशलों को मजबूत करने के उद्देश्य से 'निपुण हरियाणा मिशन' प्रदेशभर में व्यापक शैक्षिक अभियान के रूप में कार्य कर रहा है। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रही इस यात्रा में जिला झज्जर ने योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ-साथ स्थानीय जरूरतों के अनुरूप नवाचार और

निरंतर शैक्षिक अनुश्रवण के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डीईओ रतिंद्र सिंह ने बताया कि जिला में 'मिशन निपुण झज्जर' के तहत बच्चों की सीखने की गति बढ़ाने, मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को मजबूत करने तथा भाषायी कौशल विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विद्यालयों की वास्तविक जरूरतों, शिक्षकों के अनुभव और बच्चों की सीखने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गतिविधियों और नवाचारों को अपनाया जा रहा है।

नेतृत्व, सहभागिता और नवाचार का संगम निपुण के जिला संयोजक डॉ सुदर्शन पूनिया ने बताया कि झज्जर में मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यक्रम को प्रभावी दिशा देने में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी राजबाला मलिक, जिला शिक्षा अधिकारी रतिंद्र सिंह के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने बताया कि शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों, खंड शिक्षा अधिकारियों, मेटर्स और अकादमिक टीमों की सक्रिय सहभागिता ने अभियान को साझा शैक्षिक प्रयास का स्वरूप दिया। बच्चों की सीखने की प्रगति को समझने और आवश्यकता के अनुसार शिक्षण पद्धतियों में बदलाव करने पर निरंतर जोर दिया गया।

गतिविधियों से सीखने को बनाया रोचक निपुण के जिला संयोजक डॉ सुदर्शन पूनिया बताते हैं कि झज्जर में नवाचारों को केवल गतिविधियों तक सीमित न रखते हुए उन्हें बच्चों के वास्तविक सीखने के परिणामों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। स्थानीय परिस्थितियों और बच्चों की जरूरतों के अनुसार गतिविधि आधारित शिक्षण, भाषा विकास और संख्या ज्ञान से जुड़े विभिन्न प्रयोग किए गए।

ग्राम सभाओं में जिम्मेदारी के साथ हो आय सत्यापन का कार्य : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने ग्राम पंचायतों में आयोजित होने वाली ग्राम सभाओं को लेकर ली अधिकारियों की बैठक पात्र एवं अपात्र परिवारों का सत्यापन तथा डेटा की सटीकता एवं गुणवत्ता को प्राथमिकता देने के लिए निर्देश

झज्जर, 25 सितंबर जिलाभर की सभी ग्राम पंचायतों में समयबद्ध रूप से ग्राम सभाएं आयोजित करते हुए परिवार पहचान पत्र से संबंधित आय एवं परिवार संरचना के डेटा का सत्यापन जिम्मेदारी के साथ किया

जाए। यह निर्देश डीसी वर्षा खांगवाल ने शुक्रवार को मुख्य सचिव हरियाणा श्री अनुराग रस्तोगी के साथ वीसी उपरत समबंधित अधिकारियों को दिए।

डीसी ने कहा कि पीपीपी आधारित डेटा की सटीकता, गुणवत्ता और विश्वसनीयता को प्राथमिकता दी जाए। सत्यापन का उद्देश्य वास्तविक रूप से गरीब एवं पात्र परिवारों की पहचान करना है, ताकि कोई जरूरतमंद परिवार सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे और अपात्र व्यक्ति योजना का लाभ न उठा सके। उन्होंने कहा कि जिला के गांवों में

ग्राम सभाओं का आयोजन किया जाना है, जिनमें आगामी 2 अक्टूबर को सामान्य ग्राम सभाएं करवाई जाएं। सत्यापन कार्य को केवल औपचारिकता न मानते हुए वास्तविक स्थिति को डेटाबेस में दर्ज किया जाए। डेटा पॉचिंग का कार्य केवल विभागीय कर्मियों की निगरानी एवं जिम्मेदारी में ही करवाया जाए क्योंकि इसी डेटा के आधार पर पात्र परिवारों को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ मिलना है।

इस अवसर एडीसी जगनिवास, डीडीपीओ निशा तंवर सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।



गांव-गांव में गूंज रही सेवा मेरा योगदान की मुहिम



आगामी 17 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा मेरा योगदान माँड्यूल में निरंतर आयोजित की जा रही जागरूकता गतिविधियां 250 गांवों में ग्रामीणों द्वारा किया जा रहा श्रमदान, कूड़ा निस्तारण के सही तरीकों की दी गई जानकारी गांवों की साफ-सफाई को ग्रामीणों ने बनाया जन अभियान

झज्जर, 25 सितंबर जिला झज्जर में आगामी 17 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत 'सेवा मेरा योगदान' माँड्यूल के अंतर्गत जिला के 250 गांवों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में ग्रामीण बड़-चड़कर भागीदारी करते हुए श्रमदान कर रहे हैं और अपने गांवों को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में योगदान दे रहे हैं। साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए आमजन को पॉलीथिन का उपयोग न करने के लिए प्रेरित किया गया।

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे इस स्वच्छता जागरूकता अभियान के दौरान ग्रामीणों को स्वच्छता बनाए रखने के साथ-साथ घर से निकलने वाले कूड़े के उचित निस्तारण की विधियों के बारे में भी जागरूक किया जा रहा है। ग्रामीणों को गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखने, कचरे को निर्धारित स्थान पर डालने तथा खुले में कूड़ा न फेंकने के लिए प्रेरित

किया जा रहा है।

250 गांवों में ग्रामीणों ने संभाली सफाई की कमान सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट के मार्गदर्शन में जिला के 250 गांवों में स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। ग्रामीण सामूहिक रूप से गांवों के सार्वजनिक स्थानों, गलियों और आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई में श्रमदान कर रहे हैं। ग्रामीणों की सहभागिता से स्वच्छता अभियान लगातार जनभागीदारी का रूप ले रहा है।

कूड़ा निस्तारण के सही तरीकों की दी जा रही जानकारी सीईओ ने बताया कि सेवा मेरा योगदान अभियान के दौरान ग्रामीणों को कूड़े के उचित निस्तारण के बारे में जानकारी दी जा रही है। उन्हें घरों से निकलने वाले गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखने तथा कूड़े को खुले में न डालने के लिए जागरूक किया जा रहा है। साथ ही गांवों में स्वच्छता बनाए रखने के लिए सामूहिक जिम्मेदारी निभाने का संदेश दिया जा रहा है।

स्वच्छता को जनभागीदारी से मिल रही नई धार सीईओ ने बताया कि 'सेवा मेरा योगदान' माँड्यूल के तहत चल रही स्वच्छता गतिविधियों का उद्देश्य ग्रामीणों में स्वच्छता, सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करना है। 1250 गांवों में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी से स्वच्छता को जन अभियान का रूप दिया जा रहा है।

खरीफ फसलों के लिए 27 सितंबर तक खुला मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल :डीसी

वंचित किसान 27 सितंबर तक दर्ज कराएं फसल विवरण, सेटलाइट व ग्राउंड टूरिंग से होगा सत्यापन

झज्जर, 25 सितंबर। राज्य सरकार द्वारा खरीफ-2026 के दौरान 'मेरी फसल-मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर फसल पंजीकरण से वंचित रह गए किसानों को एक और सुनहरा अवसर प्रदान किया गया है। डीसी वर्षा खांगवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि जिन किसानों ने अभी तक अपनी खरीफ फसलों का पंजीकरण नहीं कराया है, वे 27 सितंबर तक पोर्टल पर अपनी कृषि भूमि एवं फसल विवरण दर्ज करवा सकते हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि पोर्टल पर पंजीकरण से छूटे हुए किसान उपमंडल अधिकारी (नागरिक) के कार्यालय में जाकर भी अपनी कृषि भूमि व फसल से संबंधित जानकारी दर्ज करवा सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसानों द्वारा दर्ज किए गए भूमि एवं फसल संबंधी विवरण का सत्यापन सेटलाइट डाटा तथा संबंधित उपमंडल अधिकारी (नागरिक) द्वारा ग्राउंड टूरिंग एवं मौका निरीक्षण के माध्यम से करवाया जाएगा। पोर्टल पर किया गया फसल पंजीकरण सत्यापन उपरत ही मान्य माना जाएगा।

सही विवरण दर्ज करने की अपील डीसी वर्षा खांगवाल ने जिला के किसानों से अपील करते हुए कहा कि फसल पंजीकरण के समय अपनी भूमि एवं फसल से संबंधित पूर्ण एवं सटीक जानकारी दर्ज करें। सही विवरण देने से सत्यापन प्रक्रिया और फसल बेचने में किसानों को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अधिकारियों को दिशा-निर्देश डीसी ने बताया कि पोर्टल के पुनः खुलने की अवधि में 27 सितंबर के दौरान सभी संबंधित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी किसानों को फसल पंजीकरण प्रक्रिया सुगमता से पूर्ण करने के लिए आवश्यक सहयोग एवं सुविधा प्रदान करेंगे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे किसानों का मार्गदर्शन करें ताकि कोई भी पात्र किसान पंजीकरण से वंचित न रहे।

धर्मनगरी बेरी में लगा सेवा सेतु कैम्प, पात्र लाभार्थियों ने उठाया सरकारी सेवाओं का लाभ

सरकारी योजनाओं से हर पात्र परिवार को जोड़ने की पहल, लगा सेवा सेतु कैम्प बेरी स्थित नगरपालिका कार्यालय परिसर में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैम्प आयोजित नगरपालिका चेयरमैन देवेंद्र कादयान, मार्किट कमेटी चेयरमैन राजेन्द्र शर्मा और एसडीएम रेणुका नांदल ने नागरिकों से योजनाओं का लाभ उठाने के लिए किया प्रेरित

बेरी(झज्जर), 25 सितंबर। सरकारी जनकल्याणकारी योजनाओं और सरकारी सेवाओं का लाभ पात्र नागरिकों तक सीधे पहुंचाने के उद्देश्य से सेवा संकल्प अभियान के तहत शुक्रवार को धर्मनगरी बेरी स्थित नगरपालिका कार्यालय परिसर में सेवा सेतु कैम्प का आयोजन किया गया। सेवा सेतु कैम्प में नगरपालिका के चेयरमैन देवेंद्र कादयान मार्किट कमेटी के चेयरमैन राजेन्द्र शर्मा और एसडीएम रेणुका नांदल ने विभागीय स्टॉल का अवलोकन करते हुए पहुंचे लोगों को सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

सेवा सेतु कैम्प में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाकर आमजन को सरकारी योजनाओं, पात्रता और आवेदन प्रक्रिया की जानकारी दी गई। लोगों ने मौके पर पहुंचकर सरकारी योजनाओं की जानकारी ली और संबंधित विभागों से आवश्यक



मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सेवा सेतु कैम्प का अवलोकन करते हुए चेयरमैन देवेंद्र कादयान ने कहा कि सेवा सेतु कैम्प का उद्देश्य सरकारी योजनाओं को कागजों से निकालकर सीधे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से नागरिकों को एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों की सेवाएं और योजनाओं की जानकारी मिल रही है, जिससे उन्हें सरकारी कार्यालयों के अनावश्यक चक्कर लगाने से राहत मिलती है। उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से जनसेवा को प्राथमिकता देते हुए हर पात्र नागरिक को सरकारी योजनाओं से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि सरकार का संकल्प है कि जनकल्याणकारी

योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े पात्र व्यक्ति तक पहुंचे।

मार्किट कमेटी के चेयरमैन राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि सेवा संकल्प अभियान सरकार और आमजन के बीच संपर्क को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी सुनिश्चित होगा, जब पात्र लोगों को योजनाओं की जानकारी के साथ उनका लाभ लेने की प्रक्रिया भी सरलता से उपलब्ध हो।

सेवा सेतु कैम्प का अवलोकन करते हुए एसडीएम रेणुका नांदल ने कहा कि जानकारी के अभाव में कोई भी पात्र नागरिक योजना के लाभ से वंचित न रहे, इसी उद्देश्य से सेवा सेतु कैम्प जैसे कार्यक्रम आयोजित किए

जा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे कैम्प में पहुंचकर सरकारी योजनाओं की जानकारी लें और पात्रता के अनुसार उनका लाभ उठाएं।

एसडीएम ने कहा कि प्रशासन आमजन को सरकारी योजनाओं का लाभ प्राथमिकता के आधार पर प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है। इसी सकारात्मक सोच के क्रियान्वयन में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैम्प लगाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर नगरपालिका सचिव पवित्र गुलिया, जेई रोहित लोचब, नगर पार्षद सुरेश कुमार, समाजसेवी विजय कौशिक सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी सहित क्षेत्र के लाभार्थी मौजूद रहे।

भारी बारिश के चलते गोरखपुर में आज बंद रहेंगे 1 से 12 तक के सभी स्कूल

जिलाधिकारी के आदेश पर 26 सितंबर 2026 को अवकाश घोषित, सुरक्षा के मद्देनजर लिया गया निर्णय

रिपोर्ट विनय कुमार मिश्र परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक समाचार पत्र गोरखपुर

मुख्य तथ्य:

- आदेश जारी: जनपद में लगातार हो रही भारी बारिश को देखते हुए जिलाधिकारी के आदेश पर जिला विद्यालय निरीक्षक (DIOS) अजीत कुमार सिंह ने शुरुवार शाम कार्यालयादेश जारी कर सभी विद्यालयों में अवकाश घोषित किया है।
- किन पर लागू होगा: यह आदेश सभी बोर्ड के विद्यालयों पर लागू होगा:
 - राजकीय, परिषदीय, अशासकीय सहायता प्राप्त
 - संस्कृत विद्यालय, स्ववित्तपोषित
 - CBSE, ICSE सहित सभी बोर्ड
 - अल्पसंख्यक कल्याण विभाग से संचालित विद्यालय

परिवहन विशेष - ब्रेकिंग न्यूज़, गोरखपुर

स्कूल बंद - भारी बारिश अलर्ट

भारी बारिश के चलते गोरखपुर में आज बंद रहेंगे जिलाधिकारी के आदेश पर 26 सितंबर 2026 को अवकाश घोषित

जिला विद्यालय निरीक्षक अजीत कुमार सिंह ने जारी किया कार्यालयादेश

राजकीय, परिषदीय, अशासकीय, संस्कृत, स्ववित्तपोषित, CBSE, ICSE सभी बोर्ड के स्कूल बंद

अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के विद्यालयों पर भी लागू

विद्यार्थियों की सुरक्षा को देखते हुए निर्णय

आदेश उल्लंघन पर प्रबंधक/प्रधानाचार्य जिम्मेदार

सभी छात्र-छात्राओं के अभिभावक अपने बच्चों को घर पर ही सुरक्षित रखें। अनावश्यक बाहर निकलने से बचें।

संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | जनहित सूचना

3. मुख्य कारण: विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य स्थगित रखा गया है। लगातार बारिश से जलभराव और आवागमन में कठिनाई के चलते यह एहतियाती कदम उठाया गया है।

4. सख्त निर्देश:

- सभी विद्यालय आदेश का कड़ाई से पालन करें
- आदेश का उल्लंघन करने पर संबंधित प्रबंधक/प्रधानाचार्य स्वयं जिम्मेदार होंगे
- अभिभावक अपने बच्चों को घर पर ही सुरक्षित रखें, अनावश्यक बाहर न निकलने दें
- संपादकीय अपील: भारी बारिश के इस दौर में सभी अभिभावक, छात्र-छात्राएं और

विद्यालय प्रबंधन से अनुरोध है कि प्रशासन के निर्देशों का पालन करें और सुरक्षा को सर्वोपरि रखें।

जारीकर्ता: जिला प्रशासन, गोरखपुर। समय: प्रातः 06:30 बजे

प्रकाशक: संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | जनहित सूचना

परिवार का भरोसा, रिश्तेदारी में परोसा राजनीति में भरोसे का नया पारिवारिक अध्याय

लेखक: संजय एम तराणेकर

राजनीति में भरोसे का नया पारिवारिक अध्याय जो कभी खत्म न होने वाली चीज है। बस शर्त यह है कि परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों का जन्म होते रहना चाहिए। यानी परिवार बढ़ेगा और परिवार खिलेगा।

- समीकरणों का नया गणित राजनीति भी कमाल की चीज है। यहाँ मौसम बदलने में समय लगता है, लेकिन राजनीतिक समीकरण बदलने में कभी-कभी एक बैठक ही काफी होती है। कल तक जो नेता पार्टी के दरवाजे पर दस्तक दे रहा था, आज वही पार्टी की जिम्मेदारी का दरवाजा खोल सकता है। और अगर परिवार साथ हो तो राजनीति की सीढ़ियाँ कुछ और भी आसान दिखाई देने लगती हैं।
- सरकारी फाइल जैसी व्यवस्था अब राजनीति में परिवार का महत्व समझना हो तो किसी सरकारी दफ्तर की पुरानी फाइल देख लीजिए। ऊपर से नीचे तक सब कुछ व्यवस्थित दिखाई देता है, बस यह पता नहीं चलता कि अगली फाइल किसके हाथ में जाएगी!
- रीढ़ और सलाहकार का फुटनोट कभी कहा जाता था - “कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ है।” अब आधुनिक राजनीति ने इस वाक्य में एक नया फुटनोट जोड़ दिया है - “और परिवार रीढ़ की हड्डी के पास बैठा सलाहकार भी हो सकता है।”
- भरोसे की परिभाषा भरोसे की राजनीति भी तो कोई चीज होती है! जब सलाहकारों की चालती है तो वह यह भी कह सकते हैं कि वह पिछले कुछ

समय से सक्रिय थे, इसलिए ही तो पार्टी ने उन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। अब सवाल यह नहीं कि अनुभव कितना है, बल्कि यह भी है कि अनुभव प्राप्त करने का अवसर किसे और कितनी जल्दी मिलता है।

- पद बढ़ा, चर्चा उससे बड़ी भारतीय राजनीति की खूबसूरती देखिए - यहाँ पद का नाम जितना बड़ा होता है, उसके साथ जुड़ी चर्चा उससे भी बड़ी हो जाती है। “राष्ट्रीय संयोजक” सुनते ही लगता है कि अब पूरे देश की राजनीति की चाबी जेब में आई, भले ही जिले के 50 कार्यकर्ताओं को वह न जानता हो।
- अंतिम परीक्षा सलाहकार जमात तो यही चाहती है कि वह हमेशा कंट्रोल करते रहे। संगठनात्मक तैयारियाँ चल रही हैं। नई जिम्मेदारी पाने वालों के सामने असली चुनौती यही होगी कि वे कागज पर मिली जिम्मेदारी को जमीन पर संगठन की सक्रियता में कितना बदल पाते हैं।

निष्कर्ष: सबसे बड़ी सीख

भइये, राजनीति में विरासत मिल सकती है, पद मिल सकता है, पहचान मिल सकती है - लेकिन जनता का भरोसा शायद ऐसी चीज है जिसकी कोई पारिवारिक रजिस्ट्री नहीं होती।

यह बात जरूर है - परिवार का भरोसा, रिश्तेदारी में परोसा।

प्रकाशक: संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | विचार, व्यंग्य, विवेचना विशेषांक

परिवहन विशेष - व्यंग्य विशेष

व्यंग्य: परिवार का भरोसा, रिश्तेदारी में परोसा

राजनीति में भरोसे का नया पारिवारिक अध्याय

मुख्य व्यंग्य बिंदु:

कभी कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ था, अब परिवार रीढ़ के पास बैठा सलाहकार है

मौसम बदलने में समय लगता है, समीकरण बदलने में एक बैठक काफी

राष्ट्रीय संयोजक - नाम बड़ा, चर्चा उससे बड़ी

विरासत मिल सकती है, पद मिल सकता है, पर जनता का भरोसा - इसकी कोई पारिवारिक रजिस्ट्री नहीं होती

नोट: यहाँ दिखाया गया चित्र कार्यात्मक एवं व्यंग्यात्मक है। उद्देश्य केवल सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति पर विचार-विमर्श है।

संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | 2025 - विचार, व्यंग्य, विवेचना

रोहिणी कोर्ट में अनूठी परंपरा: विसर्जन नहीं, भक्त को भेंट की गई गणपति प्रतिमा



11वें वार्षिक गणेश विसर्जन महोत्सव में पर्यावरण संरक्षण और आस्था का संगम - साकेत कोर्ट की अधिवक्ता सीरत भट को मिला प्रतिमा प्राप्ति का सौभाग्य

रोहिणी कोर्ट- रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र नई दिल्ली

गणेश चतुर्थी पर जहाँ हर ओर विसर्जन की धूम रहती है, वहीं रोहिणी कोर्ट में पिछले 11 वर्षों से एक पर्यावरण-अनुकूल और श्रद्धापूर्ण परंपरा निर्भाई जा रही है। यहाँ भगवान श्री गणेश की प्रतिमा का पारंपरिक विसर्जन करने के बजाय उसे सम्मानपूर्वक किसी भक्त को भेंट किया जाता है। इस वर्ष यह सौभाग्य साकेत कोर्ट की अधिवक्ता सीरत भट को प्राप्त हुआ।

कैसे मिला सौभाग्य: अधिवक्ता सीरत भट को जब इस अनूठी परंपरा

की जानकारी मिली तो वे इससे अत्यंत प्रभावित हुईं। उन्होंने ज्यूडिशियल कार्डसिल के चेयरमैन एवं लॉयर्स फेडरेशन के अध्यक्ष श्री राजीव अग्निहोत्री से अनुरोध किया कि इस वर्ष की प्रतिमा उन्हें भेंट की जाए। अधिवक्ता सुरेंद्र त्यागी के साथ विचार-विमर्श के बाद उनका नाम स्वीकृत किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य बिंदु:

- 11 साल से अटूट परंपरा: यह आयोजन गणेश विसर्जन का 11वां वार्षिकोत्सव था, जो आस्था के साथ पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का संदेश देता है।
- आस्था और पर्यावरण का संतुलन: ज्यूडिशियल कार्डसिल के चेयरमैन राजीव अग्निहोत्री ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य धार्मिक आस्था को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना है। विसर्जन के स्थान पर प्रतिमा भेंट करना श्रद्धा और प्रकृति संरक्षण के बीच संतुलन का प्रतीक है।

- सामाजिक सद्भाव का पर्व: उन्होंने कहा कि गणेश चतुर्थी केवल धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि भाईचारे, सद्भाव और सामाजिक एकता का भी पर्व है।
- अधिवक्ता समुदाय की सराहना: अधिवक्ता सुरेंद्र त्यागी ने आगामी वर्ष के लिए प्रतिमा भेंट की परंपरा को और व्यापक बनाने की बात कही। कार्यक्रम में मौजूद अधिवक्ता कपिल कौशिक ने कहा कि वकीलों द्वारा शुरू किया गया यह कदम इतिहास में दर्ज हो चुका है। कार्यक्रम में अधिवक्ता बबीता अहलावत, कमलेश कुमार, सी.पी. गुसाई, हामिद अली, विवेक वर्मा, राधा रानी, एन.के. शर्मा सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता मौजूद रहे।

कार्यक्रम का समापन भगवान श्री गणेश से सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और अधिवक्ता समुदाय की एकजुटता की कामना के साथ हुआ।

काले पानी का प्रभाव - कारो नदी का अस्तित्व संकट में

टांगटा भील टांट के समीप नदी का पानी असामान्य रूप से काला दिखने से उठे सवाल, वैज्ञानिक जांच की मांग

रिपोर्ट: डॉ राजकुमार यादव, परिवहन विशेष

कभी आसपास के जंगल, जमीन और ग्रामीण जीवन के लिए जीवनदायिनी मानी जाने वाली कारो नदी इन दिनों प्रदूषण की आशंका के चलते गंभीर चिंता का विषय बन गई है। नदी के एक हिस्से में पानी का रंग असामान्य रूप से काला दिखाई देने से स्थानीय स्तर पर इसके स्रोत और कारण को लेकर सवाल उठने लगे हैं। टांगटा भील टांट के निकट बह रही कारो नदी के पानी में आए पड़ोस बदलाव ने पर्यावरण और जल सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है।

स्थानीय लोगों के अनुसार, नदी का पानी लंबे समय से खेती के पारंपरिक तंत्र और अनेक परिवारों के जीवन से जुड़ा रहा है। ऐसे में पानी के रंग में अचानक आए बदलाव को केवल सामान्य प्राकृतिक घटना मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

रिपोर्ट में नदी के पानी की

वैज्ञानिक एवं तंत्र जांच कराने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इसके लिए नदी के ऊपरी और निचले हिस्सों से जल के नमूने लेकर उनकी गुणवत्ता की नियमित जांच कराने की मांग की गई है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि पानी के काले होने का वास्तविक कारण क्या है।

स्थानीय स्तर पर यह सवाल भी उठ रहा है कि यदि किसी औद्योगिक या अन्य गतिविधि के कारण नदी प्रदूषित हो रही है तो उसकी जिम्मेदारी तय कर कार्रवाई क्यों न की जाए। हालांकि, प्रदूषण के वास्तविक स्रोत की पुष्टि वैज्ञानिक परीक्षण के बाद ही संभव होगी।

रिपोर्ट में जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के तहत आवश्यक कार्रवाई की मांग करते हुए संबंधित विभागों से तत्काल संज्ञान लेने का आग्रह किया गया है। संदेश स्पष्ट है - विकास जारी है, लेकिन नदी और पर्यावरण की कीमत पर नहीं।

परिवहन विशेष - मुख्य समाचार

23 सितम्बर 2026 | अंक 2847 | पृष्ठ 01

काले पानी का प्रभाव: कारो नदी का अस्तित्व संकट में

टांगटा भील टांट के समीप नदी का पानी काला, वैज्ञानिक जांच की मांग

डॉ राजकुमार यादव की रिपोर्ट

कभी जीवनदायिनी मानी जाने वाली कारो नदी आज प्रदूषण की आशंका से चिंतित। पानी का रंग काला होने से पर्यावरण और जल सुरक्षा पर सवाल। जल (प्रदूषण निवारण) अधिनियम 1974 के तहत जांच की मांग। विकास जारी है, लेकिन नदी पर्यावरण की कीमत पर नहीं।

मुख्य बिंदु:

- नदी का पानी काला, बदबू और झाग से प्रदूषित
- स्थानीय कृषि एवं पेयजल पर संकट, मछली व जलजीवों पर प्रतिकूल प्रभाव
- ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल वैज्ञानिक जांच और कार्रवाई की मांग की

विशेष — पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि औद्योगिक अपशिष्ट एवं अनियंत्रित जल निकासी के कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ा है। विशेषज्ञों ने तुरंत जल नमूनों की स्वतंत्र वैज्ञानिक जांच की सिफारिश की है। निवारक उपाय व जल उपचार आवश्यक।

टांगटा भील टांट के समीप कारो नदी का काला और प्रदूषित पानी — स्थानीय लोगों में गहरी चिंता

संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | जनहित, जनकल्याण, जनसूचना हेतु

अधिक जानकारी: www.parivahanvishesh.in | #पर्यावरण #कारोनदी_बचाओ

गयाजी - विशेष संवाददाता, परिवहन विशेष

विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला को लेकर 47 बटालियन CRPF की ओर से सीताकुंड परिसर में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। कमांडेंट अवधेश कुमार के निर्देशन में द्वितीय कमान अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह एवं डिप्टी कमांडेंट पंकज कुमार के नेतृत्व में CRPF जवानों ने सीताकुंड और आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई की।

इस मौके पर कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि पितृपक्ष मेले में देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पिंडदानी गयाजी पहुंचते हैं। ऐसे में धार्मिक स्थलों की स्वच्छता बनाए रखना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि कूड़ा-कचरा निर्धारित स्थान पर ही डालें और सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखने में प्रशासन का सहयोग करें।

परिवहन विशेष - गयाजी समाचार

19 सितम्बर 2024 | पृष्ठ 12 | अंक 258

पितृपक्ष मेला: सीताकुंड में 47 बटालियन CRPF का स्वच्छता अभियान

कमांडेंट अवधेश कुमार के निर्देशन में जवानों ने चलाया अभियान

गयाजी - पितृपक्ष मेले में देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु। सीताकुंड परिसर में द्वितीय कमान अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह और डिप्टी कमांडेंट पंकज कुमार के नेतृत्व में साफ-सफाई।

अपील: कूड़ा निर्धारित स्थान पर डालें, धार्मिक स्थलों को स्वच्छ रखें।

संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | परिवहन विशेष, गयाजी | पृष्ठ 02

पितृपक्ष मेला स्वच्छता अभियान - 2024

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

पृथ्वी के चुंबकीय संकेतों को पढ़ना: पशुओं के दिशा-निर्धारण



● डॉ. विजय गर्ग

कुछ जीव चुंबकीय क्षेत्र की दिशा को महसूस कर सकते हैं, जिससे उन्हें यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि उन्हें किस दिशा में जाना है। कुछ अन्य जीव चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता या उसके झुकाव से संबंधित जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं, जिससे वे विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को पहचानने में सक्षम हो सकते हैं। यह क्षमता लंबी दूरी के प्रवास के दौरान विशेष रूप से उपयोगी होती है, जब जीवों को सैकड़ों या हजारों किलोमीटर तक अपनी दिशा बनाए रखनी होती है।

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

हर वर्ष लाखों पशु पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों में अद्भुत यात्राएँ करते हैं। पक्षी प्रवास के दौरान हजारों किलोमीटर की दूरी तय करते हैं, समुद्री कछुए उन तटों पर लौटते हैं जहाँ उनका जन्म हुआ था, सैल्मन मछलियाँ अपने मूल नदी-क्षेत्रों तक वापस पहुँचती हैं और कुछ कीट भोजन तथा अनुकूल वातावरण की तलाश में बहुत लंबी दूरी तय करते हैं। लेकिन जब आसपास कोई परिचित भौगोलिक संकेत मौजूद नहीं होता, तब ये जीव इतनी सटीकता से अपना मार्ग कैसे निर्धारित करते हैं?

इसका एक महत्वपूर्ण उत्तर एक अद्भुत जैविक क्षमता में छिपा है, जिसे मैग्नेटोरिसेप्शन (Magnetoreception) कहा जाता है। यह कुछ जीवों की पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को महसूस करने और उसका उपयोग करने की क्षमता है।

पृथ्वी एक विशाल चुंबकीय प्रणाली की तरह व्यवहार करती है। इसका चुंबकीय क्षेत्र पूरे ग्रह को घेरता है और अंतरिक्ष में काफी दूर तक फैला हुआ है। यद्यपि मनुष्य इस क्षेत्र को सीधे महसूस नहीं कर सकते, लेकिन कई पशु इसकी विशेषताओं का उपयोग दिशा या स्थान से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए करते दिखाई देते हैं।

प्रकृति का अदृश्य कम्पास

जब कोई प्रवासी पक्षी विशाल समुद्र के ऊपर उड़ रहा होता है, तो उसके आसपास के परिचित भौगोलिक संकेत गायब हो सकते हैं। फिर भी वह एक निश्चित दिशा में अपनी यात्रा जारी रखता है। शोध से प्रमाण मिले हैं कि चुंबकीय क्षेत्र पशुओं को ऐसी जानकारी प्रदान कर सकता है, जो कम्पास की तरह काम करती है।

कुछ जीव चुंबकीय क्षेत्र की दिशा को महसूस कर सकते हैं, जिससे उन्हें यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि उन्हें किस दिशा में जाना है। कुछ अन्य जीव चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता या उसके झुकाव से संबंधित जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं, जिससे वे विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को पहचानने में सक्षम हो सकते हैं।

यह क्षमता लंबी दूरी के प्रवास के दौरान

विशेष रूप से उपयोगी होती है, जब जीवों को सैकड़ों या हजारों किलोमीटर तक अपनी दिशा बनाए रखनी होती है।

पक्षी और चुंबकीय संवेदना

प्रवासी पक्षी मैग्नेटोरिसेप्शन पर होने वाले शोध में सबसे अधिक अध्ययन किए गए जीवों में शामिल हैं। प्रयोगों से संकेत मिले हैं कि कुछ पक्षी अपने दिशा-निर्धारण तंत्र के एक हिस्से के रूप में पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग कर सकते हैं।

शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र क्रिप्टोक्रोम (Cryptochrome) नामक प्रकाश-संवेदी प्रोटीन से जुड़ा है, जो कई जीवों की आँखों में पाया जाता है। वैज्ञानिकों ने प्रस्तावित किया है कि क्रिप्टोक्रोम से जुड़ी प्रकाश-निर्भर रासायनिक प्रक्रियाएँ कुछ पक्षियों को चुंबकीय जानकारी महसूस करने में सहायता कर सकती हैं। इसे रैडिकल-पेयर प्रक्रिया (radical-pair process) से जोड़कर भी अध्ययन किया जा रहा है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि पक्षी चुंबकीय रेखाओं को किसी नक्शे पर खींची गई रेखाओं की तरह देखते हैं। बल्कि चुंबकीय जानकारी उनकी दृश्य-प्रसंस्करण प्रणाली के साथ परस्पर क्रिया करके दिशा से संबंधित एक संवेदनात्मक संकेत उत्पन्न कर सकती है।

हालाँकि, इसकी सटीक जैविक प्रक्रिया अभी भी वैज्ञानिक शोध का सक्रिय विषय है।

सूक्ष्म चुंबकीय कण

एक अन्य प्रस्तावित तंत्र सूक्ष्म चुंबकीय पदार्थों, विशेषकर मैग्नेटाइट (Magnetite) से संबंधित है। मैग्नेटाइट एक प्राकृतिक चुंबकीय खनिज है, जो कुछ जीवित जीवों में भी पाया गया है।

शोधकर्ताओं ने यह जानने का प्रयास किया है कि क्या पशुओं में मौजूद मैग्नेटाइट-युक्त संरचनाएँ चुंबकीय क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों के प्रति प्रतिक्रिया कर सकती हैं और यह जानकारी तंत्रिका तंत्र तक पहुँचा सकती हैं।

चुनौती यह पता लगाने की है कि ये संरचनाएँ वास्तव में कहाँ स्थित हैं, जीवित प्राणियों में कैसे कार्य करती हैं और इनके संकेतों को मस्तिष्क किस प्रकार समझता है। वैज्ञानिक व्यवहार संबंधी प्रयोगों, माइक्रोस्कोपी, आनुवंशिकी और तंत्रिका-



विज्ञान जैसी विधियों से इन प्रश्नों का अध्ययन कर रहे हैं।

समुद्री कछुए: महासागरों में दिशा-निर्धारण

समुद्री कछुए इस क्षमता का एक और आकर्षक उदाहरण हैं। युवा कछुए विशाल समुद्री क्षेत्रों में यात्रा कर सकते हैं और बाद में अपने जीवन-चक्र से जुड़े क्षेत्रों की ओर लौट सकते हैं।

शोध से संकेत मिलता है कि समुद्री कछुए चुंबकीय क्षेत्र की विभिन्न विशेषताओं के प्रति प्रतिक्रिया कर सकते हैं। चूँकि पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र भौगोलिक स्थान के अनुसार बदलता है, इसलिए ये संकेत कछुओं को अपने स्थान के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं।

इस विचार को कभी-कभी “चुंबकीय मानचित्र” कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि पशु के पास कोई पारंपरिक नक्शा होता है। इसके बजाय वह चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता और झुकाव के विशेष संयोजनों को सोख सकता है या उनके प्रति प्रतिक्रिया कर सकता है, जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र से जुड़े होते हैं।

सैल्मन और अन्य जीव

चुंबकीय संवेदना केवल पक्षियों और कछुओं तक सीमित नहीं है। मछलियों, उभयचरों, कीटों, स्तनधारियों और अन्य जीवों में भी चुंबकीय क्षेत्र से प्रभावित व्यवहार के प्रमाण मिले हैं।

उदाहरण के लिए, सैल्मन मछलियाँ मोटे पानी और समुद्र के बीच अद्भुत प्रवास करती हैं। उनके दिशा-निर्धारण में गंध पहचानने की क्षमता और पर्यावरणीय संकेतों सहित कई संवेदी प्रणालियाँ शामिल होती हैं। उनके मार्ग में पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की भूमिका पर भी शोध किया गया है।

मोनाक तितली भी एक दिलचस्प उदाहरण है। अपने लंबे प्रवास के दौरान यह सूर्य की स्थिति सहित विभिन्न पर्यावरणीय संकेतों का उपयोग करती है और संभवतः चुंबकीय संकेत भी उसके दिशा-निर्धारण में भूमिका निभाते हैं।

कुछ स्तनधारियों, जैसे कुछ कुंतकों और चमगादड़ों में भी चुंबकीय संवेदनशीलता की जाँच की गई है।

बहु-संवेदी दिशा-निर्धारण प्रणाली मैग्नेटोरिसेप्शन को ऐसी अकेली दिशा-निर्धारण प्रणाली नहीं समझना चाहिए, जो अन्य सभी संकेतों से स्वतंत्र होकर काम

करती है। पशु अक्सर कई प्रकार की सूचनाओं को एक साथ इस्तेमाल करते हैं। वे सूर्य, तारों, भौगोलिक संकेतों, गंध, ध्वनि, समुद्री धाराओं, हवा की दिशा और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक संकेत का महत्व प्रजाति, आयु, पर्यावरण और प्रवास के चरण के अनुसार अलग-अलग हो सकता है।

यह बहु-संवेदी व्यवस्था उपयोगी होती है। यदि बादल सूर्य को ढक लें या कोई जीव किसी अपरिचित क्षेत्र में पहुँच जाए, तो कोई अन्य संवेदी प्रणाली उसे दिशा-निर्धारण में सहायता कर सकती है।

यह विज्ञान क्यों महत्वपूर्ण है?

पशुओं के दिशा-निर्धारण को समझना केवल एक रोचक वैज्ञानिक प्रश्न नहीं है। इससे हमें यह समझने में भी सहायता मिल सकती है कि पशु पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

मानवीय गतिविधियाँ प्राकृतिक आवासों, प्रवासी मार्गों और पशुओं के संवेदी वातावरण को बदल सकती हैं। कृत्रिम प्रकाश, कुछ प्रकार के विद्युत चुंबकीय व्यवधान, आवासों का विनाश और जलवायु परिवर्तन उन जीवों को प्रभावित

कर सकते हैं जो अनेक पर्यावरणीय संकेतों पर निर्भर करते हैं।

इसलिए मैग्नेटोरिसेप्शन का अध्ययन पारिस्थितिकी और संरक्षण से संबंधित अनुसंधान में भी योगदान दे सकता है। यह हमें यह भी याद दिलाता है कि पशु संसार को ऐसी संवेदी प्रणालियों के माध्यम से अनुभव करते हैं, जो मनुष्यों से काफी अलग हैं।

प्रकृति से एक सीख

मनुष्य ने पृथ्वी पर अपना मार्ग खोजने के लिए उपग्रह, GPS और डिजिटल नेविगेशन प्रणालियाँ विकसित कर ली हैं। लेकिन प्रकृति ने आधुनिक तकनीक के आने से बहुत पहले ही अत्यंत प्रभावशाली दिशा-निर्धारण प्रणालियाँ विकसित कर ली थीं।

एक छोटा पक्षी जो महाद्वीप पार करता है, समुद्र में लंबी यात्रा करने वाला कछुआ या मौसमी मार्ग पर चलने वाली तितली— ये सभी ऐसे संकेतों पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं जो मनुष्य की आँखों और इंद्रियों के लिए पूरी तरह अदृश्य हैं।

मैग्नेटोरिसेप्शन का अध्ययन हमें एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सीख देता है: मनुष्य किसी संकेत को महसूस नहीं कर सकता, इसका अर्थ यह नहीं है।

हुनर बने ताकत: ग्रामीण महिलाओं की नई उड़ान

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

ग्रामीण महिलाओं के पास हमेशा से ही बहुमूल्य हुनर रहे हैं, लेकिन उनकी बहुत-सी प्रतिभाएँ घरों, खेतों और स्थानीय समुदायों तक ही सीमित रही हैं। कृषि और पशुपालन से लेकर कढ़ाई, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण और पारंपरिक कलाओं तक, ग्रामीण महिलाएँ परिवार और समाज के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। चुनौती योग्यता की कमी नहीं, बल्कि ऐसे अवसर पैदा करने की है, जो उनके हुनर को टिकाऊ रोजगार और आय में बदल सकें।

आज कौशल विकास, डिजिटल तकनीक, स्वयं सहायता समूहों और बेहतर बाजार तक पहुँच के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं। प्रशिक्षण पारंपरिक ज्ञान को बाजार में बिकने वाले उत्पादों और सेवाओं में बदलने में मदद कर सकता है, जबकि उद्यमिता महिलाओं को अधिक आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान कर सकती है।

स्वयं सहायता समूह (SHGs) इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण मंच बन चुके हैं। दीनदयाल अंत्योदय योजना—राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) के माध्यम से लाखों ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया है और आजीविका, वित्तीय समावेशन तथा उद्यम विकास के लिए सहायता दी जा रही है। अगस्त 2026 तक इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 10.08 करोड़ महिलाओं को 92.30 लाख स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया था।

कौशल विकास की वास्तविक ताकत प्रशिक्षण को वास्तविक बाजार से जोड़ने में है। सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी प्रबंधन, हस्तशिल्प या डिजिटल सेवाएँ सीखना महत्वपूर्ण है, लेकिन महिलाओं को वित्त, तकनीक, पैकेजिंग, परिवहन, ब्रांडिंग और ग्राहकों तक पहुँच की भी आवश्यकता होती है। इन कड़ियों के अभाव में प्रशिक्षण केवल एक प्रमाण-पत्र बनकर रह सकता है, आय का साधन नहीं।

डिजिटल तकनीक नए दरवाजे खोल



सकती है। गाँव में रहने वाली महिला अपने हाथों से बनाए उत्पादों को स्थानीय बाजार से बाहर भी बेच सकती है, डिजिटल भुगतान का उपयोग कर सकती है, सोशल मीडिया के माध्यम से अपने उत्पादों का प्रचार कर सकती है और ग्राहकों से सीधे संपर्क कर सकती है। इसलिए डिजिटल साक्षरता भी व्यावसायिक कौशल जितनी ही महत्वपूर्ण बनती जा रही है।

पारंपरिक हुनर को भी आधुनिक रूप दिया जा सकता है। स्थानीय कढ़ाई, बुनाई, मिट्टी के बर्तन, खाद्य उत्पाद, प्राकृतिक सामग्री और क्षेत्रीय हस्तशिल्प को आधुनिक डिजाइन और पेशेवर पैकेजिंग के साथ नए उत्पादों के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए उसे आर्थिक संसाधन में भी बदला जा सकता है।

उद्यमिता महिलाओं के आत्मविश्वास को भी मजबूत कर सकती है। अपनी आय होने से घरेलू निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ सकती है और बच्चों की शिक्षा तथा परिवार के कल्याण में निवेश के अवसर बढ़ सकते हैं। हालाँकि, महिलाओं के सशक्तिकरण को केवल आय के आधार पर नहीं मापा जाना चाहिए। ज्ञान तक पहुँच, वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता, आवागमन, डिजिटल कौशल और सामुदायिक संस्थाओं में भागीदारी भी इसके महत्वपूर्ण पहलू हैं।

सरकारी कार्यक्रम भी इस बदलाव को समर्थन दे रहे हैं। कौशल विकास और उद्यमिता से जुड़ी पहलें प्रशिक्षण प्रदान करती हैं, जबकि ग्रामीण आजीविका कार्यक्रम महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों, ग्रुप और उद्यम के अवसरों से जोड़ते हैं।

तकनीकी इस यात्रा में एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। वूमेन टेक्नोलॉजी पार्क्स (Women Technology Parks) ग्रामीण और

अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के लिए विज्ञान और तकनीक आधारित आजीविका के समाधान को बढ़ावा देते हैं तथा कौशल विकास, क्षमता निर्माण और स्थानीय अवसरों पर जोर देते हैं।

फिर भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। महिलाओं की बाजार, तकनीक, परिवहन, वित्त और व्यावसायिक जानकारी तक पहुँच सीमित हो सकती है। घरेलू जिम्मेदारियाँ भी प्रशिक्षण या उद्यमिता के लिए उपलब्ध समय को सीमित कर सकती हैं। सामाजिक अपेक्षाएँ उनकी आवाजही और निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए केवल महिलाओं को प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं है; उनके आसपास एक सहायक और अनुकूल वातावरण तैयार करना भी आवश्यक है।

इसलिए ग्रामीण महिलाओं के रोजगार का भविष्य केवल नौकरियाँ उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसमें क्षमताओं का विकास, उद्यमिता को प्रोत्साहन और हुनर से आय, आय से आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्भरता से नेतृत्व तक का मार्ग तैयार करना शामिल होना चाहिए।

हर गाँव में प्रतिभा है। हर महिला में सीखने, सृजन करने और योगदान देने की क्षमता है। आवश्यकता केवल ऐसे वातावरण की है, जहाँ यह क्षमता विकसित हो सके।

जब किसी ग्रामीण महिला का हुनर आय अर्जित करने के अवसर में बदलता है, तो इसका लाभ केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। यह परिवार को मजबूत कर सकता है, स्थानीय रोजगार पैदा कर सकता है, पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित कर सकता है और पूरे समुदाय के आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है।

हुनर केवल कमाई का साधन नहीं है। यह आत्मविश्वास, सम्मान और अवसरों का स्रोत बन सकता है। ग्रामीण महिलाओं की नई यात्रा केवल रोजगार पाने की यात्रा नहीं, बल्कि ज्ञान और हुनर को ताकत में बदलने और अपने तथा अपने समुदायों के लिए नए क्षितिज खोलने की यात्रा है।

विशेष संपादकीय : पितृ पक्ष 2026 श्राद्ध से पहले श्रद्धा, कर्मकांड से पहले कर्तव्य

मृत्यु के बाद भव्य श्राद्ध, पर जीते - जी बुजुर्गों व माता-पिता की उपेक्षा क्यों? डिजिटल पीढ़ी के सामने संस्कारों की सबसे बड़ी परीक्षा



लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र
प्रकाशक: संजय कुमार बठला | प्रधान संपादक, परिवहन विशेष | जनहित, जनकल्याण, जनसूचना हेतु

- पितृ पक्ष 2026 की तिथियाँ
पंचांग गणना के अनुसार भ्रम को स्पष्ट करते हुए -
- 26 सितंबर 2026, शनिवार - पूर्णिमा श्राद्ध (पितृ पक्ष से ठीक पूर्व)
- मुख्य पितृ पक्ष का आरंभ 27 सितंबर रविवार, प्रतिपदा से 10 अक्टूबर शनिवार, सर्वपितृ अमावस्या तक।
- तिथि श्राद्ध
- 26 सितंबर
- 27 सितंबर
- 28 सितंबर
- 29 सितंबर
- महाभरणी श्राद्ध
- 30 सितंबर
- श्राद्ध
- 1 अक्टूबर
- 2 अक्टूबर
- 3 अक्टूबर
- 4 अक्टूबर
- 5 अक्टूबर
- 6 अक्टूबर
- 7 अक्टूबर
- श्राद्ध
- 8 अक्टूबर
- 9 अक्टूबर
- 10 अक्टूबर
- पूर्णिमा श्राद्ध
- प्रतिपदा श्राद्ध
- द्वितीया श्राद्ध
- तृतीया व
- चतुर्थी-पंचमी
- षष्ठी श्राद्ध
- सप्तमी श्राद्ध
- अष्टमी श्राद्ध
- नवमी श्राद्ध
- दशमी श्राद्ध
- एकादशी श्राद्ध
- द्वादशी व मघा
- त्रयोदशी श्राद्ध
- चतुर्दशी श्राद्ध
- सर्वपितृ



आध्यात्मिक संदेश का वैश्विक रूप पितृ पक्ष केवल कर्मकांड नहीं, जड़ों की ओर लौटने का पर्व है। पितरों का सूक्ष्म रूप में आना आस्था है, पर इसका सामाजिक संदेश सार्वभौमिक है - मनुष्य अकेला नहीं बनता, उसके पीछे पीढ़ियों का त्याग है। विश्व की अनेक संस्कृतियों में भी पूर्वज-स्मरण की परंपरा है।

अमावस्या

2. संपादकीय विश्लेषण

1. सबसे बड़ा प्रश्न तारीख का नहीं, चरित्र का है जिस देश की संस्कृति “मातृ देवो भव, पितृ देवो भव” का उद्घोष करती है, वहाँ आज यह असहज प्रश्न खड़ा है कि हम मृत्यु के बाद श्राद्ध दिखाने में तो आगे हैं, पर जीते-जी समय, संवाद और सम्मान देने में पीछे क्यों हट रहे हैं?

2. डिजिटल युग - सुविधा बनाम संवेदना तकनीक ने दुनिया को हथेली पर ला दिया, पर एक ही घर में भावनात्मक दूरी बढ़ी है। नई पीढ़ी का शहरों-विदेशों में जिना प्रगति है, पर प्रगति का अर्थ माता-पिता से संबंध समाप्त होना नहीं हो सकता। समस्या तकनीक नहीं, बल्कि जब सुविधा संवेदना की जगह लेने लगे तब है।

3. वायरल वीडियो और सच्चाई

सोशल मीडिया पर वृद्ध माता-पिता को अकेला छोड़ने, दुर्व्यवहार के वीडियो आते हैं। प्रत्येक वीडियो की सत्यता जांचे बिना पूरे समाज का निष्कर्ष नहीं निकालना

चाहिए, पर यह प्रश्न अवश्य उठता है - यदि माता-पिता जीते-जी प्रेम के लिए तरसें, तो मृत्यु बाद का भव्य आयोजन क्या उस अभाव की भरपाई कर सकता है? श्राद्ध की आत्मा “श्रद्धा” है, और उसका पहला प्रमाण जीवित माता-पिता के प्रति व्यवहार है।

4. आध्यात्मिक संदेश का वैश्विक रूप पितृ पक्ष केवल कर्मकांड नहीं, जड़ों की ओर लौटने का पर्व है। पितरों का सूक्ष्म रूप में आना आस्था है, पर इसका सामाजिक संदेश सार्वभौमिक है - मनुष्य अकेला नहीं बनता, उसके पीछे पीढ़ियों का त्याग है। विश्व की अनेक संस्कृतियों में भी पूर्वज-स्मरण की परंपरा है।

5. कानून और संस्कार में अंतर भारत में माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण अधिनियम 2007 है। अदालत भरण-पोषण का आदेश दे सकती है, पर माँ के अकेलेपन को पुत्र के स्नेह में बदलने का आदेश कोई कानून नहीं दे सकता। इसके लिए संस्कारों की सामाजिक पुनर्जागृति

जरूरी है।

3. निष्कर्ष: संवेदनाओं की सामाजिक क्रांति आज हिंसक क्रांति नहीं, संवेदनाओं की विराट सामाजिक क्रांति की जरूरत है।

महामंत्रः

- पितृ पक्ष के 16 दिन नहीं, वर्ष के 365 दिन श्रद्धा रखें

- परिवार सत्ताह में निश्चित समय बुजुर्गों के साथ संवाद के लिए तय करे

- दूर रहने वाली संतान नियमित वीडियो संवाद, स्वास्थ्य निगरानी करे

- बच्चों को दादा-दादी, नाना-नानी के संघर्ष की कहानियाँ सुनाई जाएं

- डिजिटल साधनों का “पीढ़ियों को जोड़ने वाला सेतु” बनाएँ

अंतिम संदेश: प्रश्न यह नहीं कि हमने पितरों के लिए कितने दीप जलाए, प्रश्न यह है कि जब माता-पिता सामने थे, तब हमने उनके जीवन में कितनी रोशनी भरी? पितृ पक्ष की सार्थकता तभी है जब “मृत्यु के बाद श्रद्धा” के साथ “जीवन रहते सेवा” हमारी संस्कृति बने।

सीमा पर सड़कें बदहाल, सवालों के घेरे में विभागीय ‘मैनेजमेंट’

ओडिशा में 10 किमी सड़क पर 500 से अधिक गड्ढे, झारखंड सीमा पर चकाचक सड़क; राईबोंगा रोड की कथित अनियमितताओं के बाद भी ठेकेदार को फिर काम का अवसर मिलने पर उठे गंभीर सवाल रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र ओडिशा राउरकेला,

ओडिशा-झारखंड सीमा पर सड़क की बदहाली अब केवल विकास की तस्वीर का सवाल नहीं रह गई है, बल्कि यह सड़क निर्माण, ठेकेदारी व्यवस्था और विभागीय जवाबदेही पर भी गंभीर प्रश्न खड़े कर रही है। कुआरमुंडा ब्लॉक के सलंगाबहाल चौक से मझापड़ा होते हुए झारखंड सीमा तक जाने वाले मार्ग की स्थिति जहां बेहद खराब है, वहीं सीमा पार झारखंड की सड़कें बेहतर नजर आती हैं।

ओडिशा की ओर लगभग 10 किलोमीटर सड़क पर 500 से अधिक बड़े गड्ढे होने की बात सामने आई है। कई गड्ढे एक से दो फीट तक गहरे बताए जा रहे हैं। नतीजा यह है कि जिस दूरी को झारखंड की ओर वाहन कुछ मिनटों में पार कर लेते हैं, उसे ओडिशा की ओर तय करने में करीब एक घंटे तक लग रहा है। बारिश के दौरान स्थिति और गंभीर हो जाती है। स्कूलों विद्यार्थियों, ग्रामीणों और प्रतिदिन आवागमन करने वाले सैकड़ों वाहन चालकों की परेशानी



लगातार बढ़ रही है। लेकिन इस पूरे मामले का सबसे गंभीर पहलू राईबोंगा रोड से जुड़ी कथित अनियमितताओं को लेकर है। उपलब्ध निविदा रिकॉर्ड से स्पष्ट है कि हाटीबारी-बीरमित्रपुर-राईबोंगा-सलंगाबहाल मार्ग के सुधार एवं सुदृढ़ीकरण का काम सरकारी स्तर पर स्वीकृत/निविदित रहा है।

स्थानीय स्तर पर यह सवाल उठाया जा रहा है कि जिस ठेकेदार के विरुद्ध राईबोंगा रोड के काम में अनियमितताओं के आधार पर ब्लैकलिस्ट करने तक की सिफारिश की गई थी, उसे बाद में दोबारा सड़क कार्य का अवसर आखिर किस प्रक्रिया के

तहत मिला? यदि अनियमितताओं पर विभागीय स्तर पर कार्रवाई की अनुशंसा हुई थी, तो क्या उस मामले का अंतिम निपटारा हुआ? क्या ठेकेदार को क्लीन चिट मिली? और यदि नहीं, तो उसे पुनः कार्य देने का निर्णय किस अधिकारी या सक्षम प्राधिकारी ने लिया?

यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ओडिशा के ठेकेदारी नियमों में गंभीर अनियमितता की स्थिति में जांच, शो-काॅज और सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति के बाद ब्लैकलिस्टिंग की प्रक्रिया का प्रावधान है।

सड़क बदहाल, जिम्मेदारी किसकी?

वर्ष 2024 में मरम्मत का काम एक ठेका संस्था को दिए जाने और काम अधूरा छोड़ दिए जाने की बात भी सामने आई है। विभागीय अधिकारियों द्वारा ठेकेदार को दोबारा काम शुरू करने के लिए निर्देशित किए जाने की सूचना है। ठेका संस्था ने अक्टूबर से गड्ढे भरने तथा दुर्गापूजा से पहले पिचू कार्य पूरा करने का आश्वासन दिया है।

अब असली सवाल यही है—जिस व्यवस्था में पहले काम की गुणवत्ता और अनियमितताओं को लेकर सवाल उठे, उसी व्यवस्था में वही ठेकेदारी तंत्र दोबारा कैसे सक्रिय हुआ? क्या विभाग ने पुराने मामले की जांच और कार्रवाई

पूरी किए बिना नया अवसर दिया, या सक्षम स्तर से कोई ऐसी अनुमति दी गई जिसकी जानकारी जनता के सामने नहीं है?

यह मामला केवल एक सड़क की मरम्मत का नहीं है। सरकारी धन, सड़क की गुणवत्ता, ठेकेदार की जवाबदेही और अधिकारियों की निगरानी—इन चारों की पारदर्शिता का सवाल है। इसलिए राईबोंगा रोड से संबंधित पूर्व कार्रवाई, ब्लैकलिस्टिंग की सिफारिश, उसका अंतिम निर्णय तथा वर्तमान कार्यादेश की पूरी प्रक्रिया सार्वजनिक किए जाने की मांग अब महत्वपूर्ण हो गई है।

खनन क्षेत्र कोइड़ा का मोह नहीं छोड़ रहे अधिकारी?

परियोजना से पहले आदिवासी जमीन खरीदने के आरोप, 185 करोड़ के मुआवजे के बीच 50 करोड़ की जमीन पर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र कोइड़ा

खनिज संपदा से समृद्ध कोइड़ा क्षेत्र में जमीन की खरीद-बिक्री को लेकर गंभीर आरोप सामने आए हैं। राजस्व विभाग में लंबे समय से कार्यरत अधिकारी नरेंद्र कुमार किसान पर प्रस्तावित औद्योगिक एवं खनन परियोजनाओं से संबंधित पूर्व जानकारी का कथित लाभ उठाकर जमीन खरीदने के आरोप लगाए गए हैं। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। स्थानीय शिकायतों के अनुसार तेहराई, डेगुला, काशिरा, बलडिही सहित विभिन्न गांवों में अधिकारी एवं उनके रिश्तेदारों के नाम पर बड़ी मात्रा में जमीन खरीदी गई। आरोप है कि परियोजनाओं की जानकारी आम लोगों तक पहुंचने से पहले ही जमीन के सौदे किए गए, जिससे आदिवासी जमीन मालिकों को भविष्य में मिलने वाले वास्तविक मूल्य की जानकारी



नहीं थी।

मामले में सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार यादव ने भी इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से उठाते हुए प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) का दरवाजा खटखटाया। शिकायत के बाद मामला विभिन्न सरकारी कार्यालयों से होते हुए अब सुंदरगढ़ जिलाधिकारी कार्यालय तक पहुंचा है और संबंधित फाइल पर जांच की प्रक्रिया लंबित बताई जा रही है। इसी मामले को लेकर जिलाधिकारी शुभंकर महापात्र से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि शिकायत उनके संज्ञान में आ चुकी है। बणई उपजिलाधिकारी को मामले की

जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि जांच में संबंधित अधिकारी के विरुद्ध आरोप या दोष प्रमाणित होता है, तो जिला प्रशासन द्वारा उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, रंगटा तेहराई भूमि अधिग्रहण के लिए करीब 185 करोड़ रुपये के मुआवजे के बीच लगभग 50 करोड़ रुपये मूल्य की जमीन अधिकारी एवं उनके रिश्तेदारों के नाम होने के दावे ने मामले को और गंभीर बना दिया है। अब जांच रिपोर्ट से ही स्पष्ट होगा कि जमीन खरीद में नियमों का पालन हुआ या नहीं और लगाए गए आरोपों में कितनी सच्चाई है।

अमृत व अन्य सुपर लक्जूरियस स्टेशनों की चमक के बीच बदहाली का शिकार प्राचीनतम बामड़ा स्टेशन



जर्जर भवन, गंदगी और उपेक्षा से यात्रियों में आक्रोश; स्थानीय लोगों ने रेलवे प्रशासन की कार्यशैली पर उठाए सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बामड़ा



एक ओर रेलवे देशभर के स्टेशनों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस कर उन्हें 'अमृत स्टेशन' व स्टेशन के रूप में विकसित करने का दावा कर रहा है, वहीं दूसरी ओर बांबड़ा रेलवे स्टेशन की बदहाल तस्वीर इन दावों के बीच गंभीर सवाल खड़े कर रही है। लंबे समय से

खरखराव और बुनियादी सुविधाओं की अनदेखी के कारण स्टेशन की स्थिति लगातार जर्जर होती जा रही है। स्टेशन परिसर में कचरे का अंबार, साफ-सफाई की बदहाल व्यवस्था, बिना रंग-रोगन की दीवारें और मरम्मत के अभाव में डेटेरियट होती संरचनाएं

यात्रियों और स्थानीय लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई हैं। स्टेशन की मौजूदा स्थिति देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि रेलवे प्रशासन की प्राथमिकताओं में इस पुराने स्टेशन का रंग-रोगन की दीवारों के बीच गंभीर स्थानीय निवासी संजय राय का

कहना है कि ट्रेनों के ठहराव और सेवाओं में कटौती का मुद्दा अपनी जगह है, लेकिन जिस स्टेशन का क्षेत्रीय आवागमन और स्थानीय लोगों के जीवन से पुराना संबंध रहा है, उसकी बुनियादी सुविधाओं तक की उपेक्षा स्वीकार्य नहीं है। लोगों में इस बात को लेकर भी

नाराजगी है कि जहां कई स्टेशनों को अत्याधुनिक सुविधाओं से सजाया जा रहा है, वहीं बांबड़ा स्टेशन सामान्य रखरखाव के लिए भी तरस रहा है। स्थानीय नागरिकों ने रेलवे प्रशासन से स्टेशन की तत्काल साफ-सफाई, भवन एवं प्लेटफॉर्म की मरम्मत, रंग-

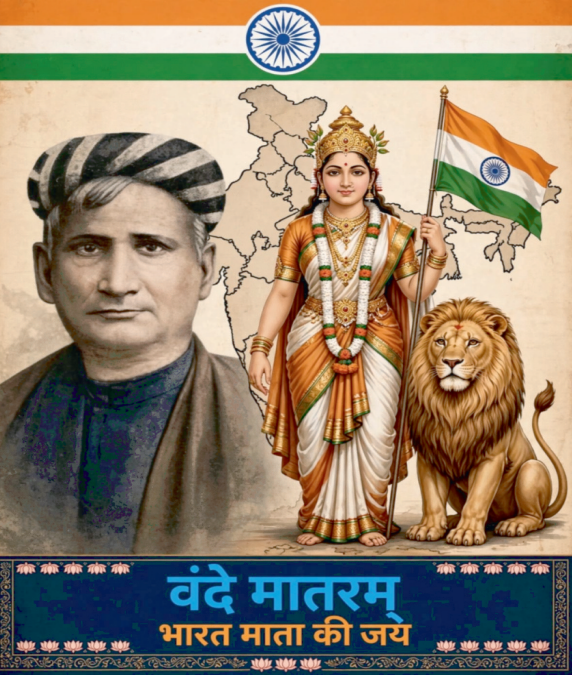
रोगन तथा नियमित रखरखाव सुनिश्चित करने की मांग की है। लोगों का कहना है कि विकास केवल बड़े स्टेशनों की चमक तक सीमित नहीं होना चाहिए; छोटे और ऐतिहासिक स्टेशनों को भी सम्मानजनक यात्री सुविधाएं मिलनी चाहिए।

रोगन तथा नियमित रखरखाव सुनिश्चित करने की मांग की है। लोगों का कहना है कि विकास केवल बड़े स्टेशनों की चमक तक सीमित नहीं होना चाहिए; छोटे और ऐतिहासिक स्टेशनों को भी सम्मानजनक यात्री सुविधाएं मिलनी चाहिए।

वंदे मातरम राष्ट्रीय गीत वंदना और कृतज्ञता का संगम

रिपोर्ट दीपक कुमार घोष विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र खुंदी

वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भगतसिंह चौक पर पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के तत्वावधान में शुक्रवार को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें उपस्थित देशप्रेमियों ने कहा कि राष्ट्रीय गीत रविवंदे मातरम् इस वर्ष अपने 150 वर्ष पूरे कर रहा है। 17 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के दिन बंकिम चंद्र चटर्जी ने इस कालजयी गीत की रचना की थी, जो बाद में उनकी प्रसिद्ध कृति 'आनंदमठ' के भाग के रूप में साहित्यिक पत्रिका 'बंगदर्शन' में प्रकाशित हुआ था। कार्यक्रम में विशेष रूप में उपस्थित पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के अध्यक्ष डॉ दीपक कुमार घोष ने कहा कि भारत सरकार ने 7 नवंबर 2025 को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में इस ऐतिहासिक अवसर पर एक साल तक चलने वाले राष्ट्रव्यापी स्मरणोत्सव की शुरुआत की। इस दौरान एक स्मारक डाक टिकट और विशेष सिक्का भी जारी किया गया। यह समारोह 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक चलेगा। इस दौरान देश के सभी जिलों, पंचायतों, स्कूल-कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों में सामूहिक गायन, प्रदर्शनों और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मुद्दू के देशप्रेमी-समाजसेवी डॉ धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने कहा कि



वंदे मातरम्यानी *‘मां, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ’ पहली बार रवींद्रनाथ टैगोर ने 1896 के कांग्रेस अधिवेशन में इसे गाया था। 17 अगस्त 1905 को पहली बार राजनीतिक नारे के रूप में इस्तेमाल हुआ। आज हर कार्यक्रम के शुभारंभ में वंदे मातरम गीत बजाया जाना चाहिए। इससे देशवासियों में देशभक्ति का संचार के साथ साथ कृतज्ञता का भाव जागृत होता है। जिससे देशविरोधी गतिविधियों पर पुर्ण विरोध लग जाएगा। अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तपन घोष ने कहा कि 1950 में

संविधान सभा ने इसे राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया, स्वतंत्रता आंदोलन में यह फुसफुसाहट से नारे में बदला और जन-जन की चेतना बन गया दिशभक्त युवा ध्रुवेंद्र भास्कर ने कहा कि रविवंदे मातरम केवल एक गीत नहीं, यह भारत माता की आत्मा की अभिव्यक्ति है।” इसे हम देश के परम सम्मान में गाते हैं। अपने देश को विकासशील बनाने के साथ-साथ पुनः विश्व गुरु बनाने के सपने को पर लगाते हैं। अनुप राय, किशोर ठाकुर, तुलसी प्रजापति, सुबोध कुमार सहित अन्य ने भी वंदे मातरम गीत एवं गीतकार की प्रशंसा की। वासना से वात्सल्य की ओर

दशलक्षण पर्व के अंतिम दिवस “उत्तम ब्रह्मचर्य एवं अनंत चतुर्दशी” पर जैन मंदिरों में उमड़े श्रद्धालु

कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं विधान पूजन के साथ 12वें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान के मोक्षकल्याणक पर चढ़ाया निर्वाण लड्डू

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र जयपुर

शुक्रवार को दशलक्षण महापर्व के अंतिम दिवस “उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी” का पावन पर्व श्रद्धा, भक्ति और आराधना के साथ संपन्न हुआ। इसी अवसर पर 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी के मोक्षकल्याणक को भी दिगंबर जैन मंदिरों में धार्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। इंजीनियर्स कॉलोनी, वरुण पथ, थड़ी मार्केट, मीरा मार्ग, हीरा पथ, एसएफएस कॉलोनी, मांग्यावास, वर्धमान सरोवर, राधा निकुंज, केसर चौराहा सहित जयपुर के विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों में दिनभर श्रद्धालुओं की भीड़ रही। राजधानी जयपुर के 225 से अधिक दिगंबर जैन मंदिरों में करीब 10 हजार से अधिक श्रावकों ने श्रीजी का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा की। हजारों श्रद्धालुओं ने 24 तीर्थंकर भगवानों के साथ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी का विधान-पूजन कर अष्टपट्टय अर्पित किए। भगवान वासुपूज्य स्वामी के मोक्षकल्याणक के अवसर पर निर्वाण कांड पाठ, मंत्रोच्चारण एवं जयमाला महाअर्घ के साथ श्रद्धालुओं ने निर्वाण लड्डू अर्पित किए और भगवान के मोक्षमार्ग की आराधना की। वासना से वात्सल्य की ओर

गमन ही “उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म” अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने शास्त्रों के अनुसार उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि— “भोगों को इतना भोगा कि खुद को ही भोग बना डाला, साध्य और साधना का अंतर मैंने आज मिटा डाला।” उन्होंने कहा कि काम और भोग में आसक्त आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप से दूर होती जाती है। अनादिकालीन संस्कारों के कारण आत्मा जब पुरुषार्थ के स्थान पर विषय-वासनाओं के अधीन हो जाती है, तब उसका आध्यात्मिक विकास बाधित होता है। शास्त्रों में विषय-वासनाओं की क्षणिक सुखानुभूति और उनके परिणामों के प्रति सावधान किया गया है। ब्रह्मचर्य को मोक्षमार्ग का महत्वपूर्ण सोपान बताते हुए उन्होंने कहा कि आत्मा में रमण करना और आत्मस्वभाव में जीना ही वास्तविक ब्रह्मचर्य है। जिस प्रकार कमल की उत्पत्ति कीचड़ में होती है, लेकिन वह कीचड़ से ऊपर उठकर निर्मल रहता है, उसी प्रकार मनुष्य का जन्म संसार में हुआ है, लेकिन संसार को विषय-वासनाओं में ही जीवन व्यतीत करना आवश्यक नहीं है। व्यक्ति को विषयों के स्थान पर आत्मचिंतन और

आत्मसंयम की ओर बढ़ने का अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अनंत चतुर्दशी का पर्व जैन धर्म में विशेष महत्व रखता है। इसी दिन 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी का मोक्षकल्याणक भी मनाया जाता है। श्रद्धालु इस अवसर पर कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं विधान पूजन कर कर्मनिर्जरा की भावना रखते हुए उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प लेते हैं। दशलक्षण पर्व के तपस्वियों का पारणा एवं सम्मान शनिवार को



अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ के राष्ट्रीय सचिव प्रमोद बाकलीवाल ने बताया कि दशलक्षण महापर्व के दौरान दस दिनों तक निर्जल उपवास करने वाले तथा तीन दिनों के “तेला” निर्जल उपवास करने वाले त्यागी-व्रतियों का पारणा मंदिरों एवं समाज के स्तर पर करवाया जाएगा। पारणा से पूर्व मंदिर समितियों, सामाजिक संस्थाओं एवं सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से

सामूहिक क्षमावाणी पर्व मनाया जाएगा। इस अवसर पर दोहरा 3 बजे से मंदिरों में श्रीजी का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न होगी। जहां संत-मुनि एवं माताजी ससंघ विराजमान हैं, वहां उनके आशीर्वाचन प्राप्त होंगे। इसके पश्चात मंदिर समितियों एवं समाजजनों द्वारा क्षमावाणी पर्व मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षमावाणी पर्व पर समाज का प्रत्येक व्यक्ति वर्षभर में जाने-अनजाने में हुई भूल-चूक के लिए एक-दूसरे से क्षमा याचना करेगा और परस्पर क्षमा प्रदान करने के भाव धारण करेगा। अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया कि जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ तत्त्वार्थसूत्र के नवें अध्याय के छठे सूत्र में आचार्य उमास्वामी ने उत्तम क्षमा सहित दस उत्तम धर्मों का उल्लेख किया है। क्षमावाणी पर्व इन्हीं उत्तम क्षमा भावों को जीवन में धारण करने और आत्मसाधना के रूप में आगे बढ़ाने का अवसर है। क्षमा मांगना और क्षमा करना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल, विनम्रता और वीरता का प्रतीक है।

झारखंड में अबतक का सबसे बड़ा बैंक लूट जमशेदपुर में, 33 करोड़ के सोने एवं 42 लाख नगद लूटे अपराधी

कर्मचारियों के हाथ पैर बांध मुंह में साटा टेप

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, लौह नगरी जमशेदपुर में अपराधियों ने झारखंड के अबतक का सबसे बड़ा लूट कॉड को हथियार के बल पर अंजाम दिया है। बारिश में रेनकोर्ट पहनकर घटना को अंजाम दिया। पुलिस द्वारा किसी की अबतक गिरफ्तारी नहीं हुई है अलबत्ता एडीजी जमशेदपुर पहुंच चुके हैं। गोलमुरी थाना क्षेत्र के मस्जिद रोड स्थित केनरा बैंक की शाखा से 33.20 करोड़ के 23.80 किलो सोने के जेवरगत (650 पैकेट) और 42 लाख रुपये कैश लूटकर अपराधी फरार हो गये.

मुख्य प्रबंधक अजीत कुमार ने गोलमुरी थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है. एफआईआर में फिलहाल पांच अज्ञात हथियारबंद अपराधियों का जिक्र है

एफआईआर में घटना का समय सुबह 9:10 बजे से 10:18 बजे के बीच का बताया गया है. अपराधियों ने बैंक में प्रवेश



करने के बाद सबसे पहले बैंक के चपरासी और निजी सुरक्षा गार्ड पर हमला किया. दोनों के घायल होने की बात एफआईआर में कही गई है और उनके इलाज का भी जिक्र है. इसके बाद हथियारबंद अपराधियों ने बैंक के अंदर मौजूद कर्मचारियों और अन्य लोगों को हथियार दिखाकर धमकाया. हथियारों के बल पर ऐसा भय पैदा किया गया कि बैंककर्मि ना

प्रतिरोध कर पाए और ना अलार्म बजा सके. शिकायत के मुताबिक अपराधियों ने बैंक के कर्मचारियों को बंधक बना लिया. उनके हाथ पैकिंग टेप से बांध दिए गए और मुंह पर भी टेप लगा दिया गया, ताकि वे किसी को घटना की जानकारी न दे सकें या मदद के लिए आवाज नहीं लगा सकें. कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों को



नियंत्रण में लेने के बाद अपराधी उन्हें हथियारों के बल पर बैंक के स्ट्रॉंग रूम/वॉल्ट की ओर ले गए. डकैतों ने स्ट्रॉंग रूम की चाबी रखने वाले बैंककर्मियों को हथियार के बल पर चाबी देने और स्ट्रॉंग रूम खोलने के लिए मजबूर किया. स्ट्रॉंग रूम खुलने के बाद अपराधियों ने वहां रखी नकदी और सोने के आभूषणों को अपने कब्जे में लेना शुरू

कर दिया. एफआईआर के अनुसार बैंक में ग्राहकों के गोल्ड लोन के एवज में गिरवी रखे गए करीब 650 गोल्ड पैकेट स्ट्रॉंग रूम में रखे थे. इन पैकेटों में अंगूठी, चेन, कान के टॉप्स समेत अलग-अलग प्रकार के सोने के आभूषण थे. एफआईआर में सोने का कुल वजन लगभग 23.80 किलोग्राम बताया गया है. शिकायत में उस समय सोने का बाजार



मूल्य करीब 13,935 रुपये प्रति ग्राम के हिसाब से लगाया गया है. इस आधार पर चोरी किए गए सोने की अनुमानित कीमत लगभग 33.20 करोड़ रुपये बताई गई है. इसके अलावा बैंक से करीब 42 लाख रुपये नकद भी अपराधी ले गए. इस तरह एफआईआर में दर्ज विवरण के अनुसार सोने और नकदी को मिलाकर वारदात में शामिल संपत्ति की कीमत करीब 33.62

करोड़ रुपये बैठती है. शिकायत के मुताबिक स्ट्रॉंग रूम से सोने के पैकेट और नकदी निकालने के बाद अपराधियों ने इन्हें बैंक के बैग/बैकपैक में भर लिया. इसके बाद करीब तीन बैग में लूटी गई संपत्ति रखी गई. एफआईआर में इन बैगों का रंग काला, लाल और हरा बताया गया है. सारा सामान लेकर अपराधी बैंक परिसर से फरार हो गये.

राहुल गांधी को अच्छे अस्पताल में इलाज कराने की जरूरत: बाबूलाल, नेता प्रतिपक्ष

झारखंड में एसआईआर को लेकर सरकार व विपक्ष आमने-सामने

झारखंड में एसआईआर को लेकर सरकार व विपक्ष आमने-सामने

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने एसआईआर को लेकर विपक्ष की ओर से उठाए जा रहे सवालों को बेबुनियाद करार दिया है. उन्होंने स्पष्ट कहा कि एसआईआर किसी पार्टी या राज्य के लिए नहीं, बल्कि देशहित में चल रहा कार्यक्रम है. बाबूलाल मरांडी ने बताया कि एसआईआर मतदाता सूची को दुरुस्त करने की पहल है. इसमें जिन लोगों की मृत्यु हो चुकी है, जो कहीं शिफ्ट हो गए हैं या जिनका नाम कई जगह मतदाता सूची में दर्ज है, उन सबको ठीक किया जाएगा. उन्होंने कहा कि इसमें संभव है कि हमारे समर्थकों के भी नाम कट जाएं. अगर मतदाता सूची का शुद्धिकरण हो रहा है तो

इसमें क्या दिक्कत है.

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर उठ रहे सवालों का जवाब देते हुए बाबूलाल मरांडी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी हो या झारखंड मुक्ति मोर्चा, उन्हें ज्ञानेश कुमार पर नहीं बल्कि अपने नेता पर चिंता करनी चाहिए.

बाबूलाल मरांडी ने सवालिया लहजे में कहा कि 2014 से पहले देश में किसकी सरकार थी? उस समय इंडिया गठबंधन की ही सरकार थी और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह थे. निश्चित रूप से उस समय के मुख्य निर्वाचन आयुक्त को कांग्रेस सरकार ने ही नियुक्त किया होगा. 2014 में कांग्रेस को 44 सीटें मिलीं जबकि भाजपा को 282 सीटें मिलीं और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी. 2019 में कांग्रेस को 52 या 55 सीटें मिलीं जबकि भाजपा को 303 सीटें मिलीं. 2024 लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 99 सीटों के चक्कर में पड़ी हुई है, जो छूट नहीं रहा.



पूर्व सीएम ने कहा कि देश या दुनिया में जहां कहीं भी अच्छा इलाज होता है, वहां राहुल गांधी का इलाज कराना चाहिए. नहीं तो कांग्रेस के साथ-साथ पूरा इंडिया गठबंधन का 2029 चुनाव में डूबना तय है. उन्होंने दाहराया कि राहुल गांधी को इलाज करवाने की जरूरत है, नहीं

तो वे कांग्रेस के साथ-साथ अपने सहयोगियों को भी डूबा देंगे. भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि कई बातें सुनते-सुनते लोग यह मानने लगे हैं कि हेमंत सरकार आदिवासी हितैषी है, लेकिन सच्चाई यह है कि वर्तमान हेमंत सरकार आदिवासी हितों के

विरुद्ध है. उन्होंने बताया कि आदिवासी हॉस्टल की स्थिति बदतर है और जनजातीय समुदाय के बच्चों को स्टडीपेंड नहीं मिल रहा है. नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी के राहुल गांधी को लेकर दिए गए बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के झारखंड प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने कहा कि ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयोग की चोरी की पोल खुल जाने पर बिलबिलाहट में भारतीय जनता पार्टी और उसके नेता इस तरह की अर्गल बयानबाजी कर रहे हैं. सिन्हा ने कहा कि देश की जनता समझ गई है कि यह जनतंत्र द्वारा चुनी गई सरकार नहीं बल्कि वोट चोरी से चुनी गई सरकार है. उन्होंने आगे कहा कि जो व्यक्ति कन्याकुमारी से कश्मीर तक की यात्रा कर चुका है और जिसने भाजपा के नफरत को मोहब्बत में बदला है, उनके बारे में बाबूलाल मरांडी का बयान बताता है कि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है

आईएएस पूजा सिंघल के खिलाफ मनी लांड्रिंग मामला रहेगा जारी : सर्वोच्च न्यायालय



2000 बेच की आईएएस 2 साल रही जेल मे, 19 करोड़ राशि उसके सीए से ईडी ने बरामद की थी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची,सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को झारखंड की आईएएस अधिकारी पूजा सिंघल के खिलाफ निचली अदालत द्वारा मामले पर संज्ञान लेने के आदेश को रद्द करने से इनकार कर दिया. इसका मतलब यह है कि उनके खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग (धन शोधन) मामले में मुकदमा जारी रहेगा. यह मामला चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी. मोहना की बेंच के सामने आया. प्रवर्तन निदेशालय ईडी की तरफ से पेश हुए एंडिशनल सॉलिसिटर जनरल एस.वी. राजू ने दलील दी कि इस अपराध पर अदालत द्वारा संज्ञान अदालत पहले ही लिया जा चुका है. पूजा सिंघल का पक्ष रख रही वरिष्ठ वकील मीनाक्षी अरोड़ा ने कहा कि इस मामले में दंड प्रक्रिया संहिता सी आर पी सी की धारा 197 के तहत एक प्रशासनिक अधिकारी पर मुकदमा चलाने के लिए जरूरी सरकारी मंजूरी नहीं दी गई थी.

अरोड़ा ने यह भी कहा कि जिस 19 करोड़ रुपये का हर जगह ढिंढोरा पीटा जा रहा है, उसका उनकी मुवक्किल से कोई लेना-देना नहीं है. दंड प्रक्रिया संहिता सी आर पी सी की धारा 197 कहती है, रजब कोई व्यक्ति, जो जज या मजिस्ट्रेट या कोई ऐसा लोक सेवक है या रहा हो, जिसे सरकार की मंजूरी के बिना उसके पद पर अपने आधिकारिक कर्तव्य को निभाने के दौरान किए गए किसी अपराध का आरोप लगाया जाता है, तो कोई भी अदालत सरकार की पिछली (यानी पहले से ली गई) मंजूरी के बिना ऐसे अपराध पर संज्ञान नहीं लेगी. सुनवाई के दौरान वकील मीनाक्षी अरोड़ा ने दलील दी, रजिस तथाकथित 19 करोड़ रुपये को सीए के पास से बरामद किया गया था, उस सीए ने अलग-अलग बयान दिए हैं. अब तक कुल सात बयान दिये हैं. वह अपने पिछले बयान से मुकर गया है और एक बयान में उसने यह भी स्वीकार किया है कि यह पैसा उसका (यानी पूजा सिंघल का) बिल्कुल नहीं है. पीठ ने जवाब दिया, रयही कारण है कि (मुकदमा चलाने की) मंजूरी का सवाल सीए के बयान की विश्वसनीयता पर निर्भर हो जाता



है... क्योंकि यहां कुछ ऐसे बयानों पर विचार किया जा रहा है जो सीधे तौर पर उन्हें दोषी ठहराते हैं. यह मामला आधिकारिक कर्तव्य के दायरे से बाहर चला जाता है. यह दलील भी दी गई कि जब सरकार से मंजूरी न मिलने पर आपत्ति जताई गई, तो प्रवर्तन निदेशालय ईडी ने तर्क दिया कि नए कानून, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता बी एन एस एस के तहत रॉटोमैटिक डीमंड सैक्शनर (यानी अपने आप मान ली गई मंजूरी) का प्रावधान है. वरिष्ठ वकील ने तर्क दिया कि सिंघल भ्रष्टाचार के मामले में आरोपी नहीं थीं, और जहां तक मनी लॉन्ड्रिंग के मामले का सवाल है, वह अपनी आधिकारिक क्षमता में काम कर रही थीं. जस्टिस बागची ने कहा कि सिंघल के पास से 19 करोड़ से अधिक की राशि बरामद की गई थी. पीठ ने संकेत दिया कि वह फिलहाल कोई राहत देने के मूड में नहीं है. पीठ ने कहा कि मुकदमा चलाने की

मंजूरी देना कानून और तथ्यों से जुड़ा एक मिला-जुला सवाल है, और यह पता लगाया जाना जरूरी है कि जब यह कथित अपराध हुआ, तब क्या वह अधिकारी अपने सरकारी काम को ही अंजाम दे रही थीं. पीठ ने कहा, रहम मुकदमा चलाने की मंजूरी के इस मुद्दे को खुला रखना चाहते हैं, ताकि कार्यवाही के सही चरण में अन्य सबूतों के साथ मिलकर इस पर फैसला किया जा सके. प्रवर्तन निदेशालय ने झारखंड खनन विभाग की पूर्व सचिव पूजा सिंघल को 11 मई 2022 को गिरफ्तार किया था. यह कार्रवाई केन्द्र सरकार की प्रमुख ग्रामीण रोजगार योजना 'मनरेगा' के क्रियान्वयन में हुए करीब 18 करोड़ रुपये के कथित घोटाले से जुड़े ठिकानों पर छापेमारी के बाद की गई थी. दो साल से अधिक समय तक जेल में रहने के बाद, 2000 बैच की इस आईएएस अधिकारी को जब जमानत मिल गई, तब जाकर उनका

निलंबन वापस लिया गया था. उन्होंने झारखंड हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की थी, जिसमें उन्होंने रांची की एक पीएमएलए कोर्ट द्वारा 19 जुलाई 2022 को उनके खिलाफ (2018 के ईसीआईआर केस 3 के सिलसिले में) कार्रवाई शुरू करने के आदेश को रद्द करने की मांग की थी. उनकी तरफ से यह दलील दी गई थी कि प्रिवेशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट पी एम एल ए की धारा 3 और 4 के तहत अपराधों पर संज्ञान लेते समय, सीआरपीसी सी आर पी सी 1973 की धारा 197 के तहत आवश्यक सरकारी मंजूरी के अनिवार्य नियम का पालन नहीं किया गया. हाई कोर्ट ने सिंघल की इस दलील को खारिज कर दिया था. कोर्ट ने फैसला सुनाया था कि व्यक्तिगत रूप से किए गए र अवैध कामों से जुड़े मामलों में मुकदमा चलाने के लिए सीआरपीसी की धारा 197 के तहत पहले से सरकारी मंजूरी लेना जरूरी नहीं है. जिसके बाद यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा.

मुरहू का ऐतिहासिक दस दिवसीय गणेश महोत्सव सम्पन्न

रिपोर्ट दीपक कुमार घोष, परिवहन विशेष समाचार पत्र खूंटी

जिले के मुरहू में चल रहे दस दिवसीय श्री गणेश महोत्सव का शुक्रवार को विधि-विधान और हर्षोल्लास के साथ समापन हो गया। सुबह से ही मंदिरों और पंडालों में भक्तों की भीड़ उमड़ी रही। समाजसेवी डॉ डीएन तिवारी एवं सुबोध मुखिया ने कहा कि दस दिन के भव्य पूजन के पश्चात ग्यारहवें दिन विसर्जन के पहले पंडितजी द्वारा हवन-पूजन और आरती के बाद गाजे-बाजे के साथ बप्पा की शोभायात्रा निकाली गई। रणणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तुजल्दी आर के जयकारों से पूरा मुरहू गूंज उठा। डॉ तिवारी ने कहा कि 2013 से दस दिवसीय गणेश पूजन होता आ रहा है, जो खूंटी जिला में एकमात्र ऐतिहासिक कार्यक्रम है। दिन प्रतिदिन लोगों की श्रद्धा और आस्था में वृद्धि होती जा रही है। पूरे सफर में गणेश जी के जयकारे के साथ सैकड़ों लोग झमाझम बारिश में भी झूमते नजर आए। युवाओं की टोली डीजे और ढोल-नगाड़ों पर थिरकती नजर आई। महिलाएं और बच्चों में विशेष उत्साह देखा गया। भक्तों ने बताया कि 10 दिनों तक रोजाना भजन-कीर्तन और प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया था। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए स्थानीय प्रशासन भी मौजूद रहा। अंत में स्थानीय जलाशय में बप्पा का विसर्जन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए।

एन सी सी शिविर के पांचवें दिन कैडेटों को दी गई ड्रिल, संचार एवं सामाजिक



हिसार/हरियाणा, 25 सितम्बर

तृतीय हरियाणा कन्या बटालियन एन सी सी, हिसार द्वारा 21 सितम्बर से 30 सितम्बर 2026 तक 10 दिवसीय एन सी सी प्रशिक्षण शिविर हिन्दू पब्लिक स्कूल, राजगढ़ रोड, चौधरीवास (हिसार) में जारी है। शिविर के पांचवें दिन के प्रशिक्षण सत्र में कैडेटों को ड्रिल, संचार कौशल एवं सामाजिक जागरूकता के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। पीआई स्टाफ द्वारा कैडेटों को हाल्ट एवं मार्च के दौरान टर्निंग की ड्रिल का अभ्यास कराया गया। हवलदार सुभाष ने कैडेटों को नेतृत्व के गुणों पर प्रेरक व्याख्यान देते हुए बताया कि एक सच्चा नेता कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, विवेक और

निर्णय क्षमता का परिचय देता है। साथ ही उन्होंने दुर्गम इलाकों में नक्शे के सहारे सही मार्ग चयन एवं गंतव्य स्थल तक पहुंचने की रणनीतियों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इसके पश्चात सुबेदार देव सिंह के निदेशन में सर्वश्रेष्ठ कैडेट चयन हेतु फायरिंग अभ्यास आयोजित किया गया, जिसमें कैडेटों ने उत्कृष्ट निशानेबाजी कौशल का प्रदर्शन किया। वहीं सहबद्ध एनसीसी अधिकारी ने राष्ट्रीय एकता एवं विविधता में एकता विषय पर कैडेटों को संबोधित किया। सांयकालीन सत्र में वॉलीबॉल मुकाबले एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण शिविर कर्नल

सतीश कुमार मिश्रा (कैम्प कमांडेंट) के नेतृत्व में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में कैप्ट एडजुटेंट सेक्रेड ऑफिसर लवलीन कौर, सीनियर जी सी आई निशा, सेक्रेड ऑफिसर पूनम, सेक्रेड ऑफिसर सुदेश, सुबेदार मेजर सीता राम, सुबेदार टेक सिंह, क्लर्क रोहित शर्मा, लखवीर सिंह, विकास कुमार, मंगल सिंह एवं अमित नेहरा आदि सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। इस शिविर में तृतीय हरियाणा कन्या बटालियन एन सी सी हिसार के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न विद्यालय व महाविद्यालय के 535 छात्रा कैडेट्स एवं रोहतक ग्रुप के अंतर्गत 11 बटालियन्स के 65 छात्र एवं छात्राएं भाग ले रहे हैं।